

आनंद अपार है ( १२४ )

हो आज घर घर में जै जै कार है।

आया साईं साहिब सुकुमार है॥

देखि जीव जगत के दुख भरे करि करुणा करुणा सिंधु उमिड़े  
जग तारण हित संत रूप धरे लीया मीरपुर में अवतार है॥

भए जननी जनक धन धन हैं लिया गोद में बाल रतन है  
मुख कांति से चमका सदन है मानो कोटि चंद्र छबि सार है॥

मन माहिनी बाल मुस्कान है देख गद् गद् तन मन प्राण है  
भए सब विधि मोद महान है मानो प्रेम की वर्षी फूहार है॥

मिलि नर नारि मंगल गावते नाच कूद के बाजे बजावते  
देव गगन से फूल बरसावते भया जंह तंह आनंद अपार है॥

सब कहते ललन चिर जीवी रहे

सुख सम्पति की नित ही सरिता गहे

सब अंचल पसार के कुशल चहें

भरा सबके हृदय में प्यार है॥